छठा – अध्याय

६. उपसंहार

"सारिका" सन् १९८९ के अंक में नारी जीवन पर लिखी गयी कुलमिलाकर सत्रह कहानियाँ हैं। इन सत्रह कहानियों में नारी की विविध रूपी समस्याओं का चित्रण किया गया है। कुछ समस्यायें पुरानी ही हैं किंतु उन्हें व्यक्त करने का अथवा उस समस्या की ओर देखने का लेखकों का आधुनिक दृष्टिकोण दिखाई देता है। और कुछ समस्यायें बिल्कुल नयी हैं जो आधुनिक युग में नारी - समस्या की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं।

"जुगनू" कहानी में सत्येनकुमारजी ने परित्यक्ता नारी का चित्रण करते हुऐ यह बताया है कि आधुनिक नारी - स्वतंत्रता की हवा से प्रभावित अंधकचरी विचारधारा में बहती नारी किसप्रकार भटक रही है इसका मार्मिक चित्रण किया है। इसके साथ ही नए रास्ते की खोज और अपनी भूल के बीच दम तोड़ती नारी का चित्रण करने का भी लेखक का और एक दृष्टिकोण है।

"आइने की वापसी" कहानी में नासिरा शर्माजी ने परित्यक्ता नारी का चित्रण करते हुए इस ओर संकेत किया है कि आज की नारी अपने मकसद के लिए पति को छोड़ने में नहीं हिचकिचाती। उसकी दृढ़प्रतिज्ञा, विचारशीलता और कृतिप्रवणता उसे अपने मंजिल तक सही अर्थों में पहुँचा रही है। लेखिका ने इसे बहुत ही सशक्त भाषा में अभिव्यक्त किया है।

"शिखर और शिखर" कहानी में हरिदत्त भट्ट शैलेशजी ने प्रेम की असफलता के कारणें को परंपरांगत रूप से ही चित्रित किया है। सामाजिक अंधरुढ़ियाँ, भिन्न जाति और समाज से डटने की शक्ति की कमी आदि प्रेम की असफलता की परंपरांगत कारणों की ही चर्चा की है।

"आइने की वापसी में प्रेम की असफलता का कारण स्वयं नारी है। नासिरा शर्माजी ने इस कहानी में आज की नारी का मनोबल चित्रित किया है। उन्होंने नारी के बदलते विचारों को सही अर्थ में परखा है और उसीप्रकार उसका चित्रण किया है।

"प्रसंग" कहानी में उषा प्रियवंदाजी ने इसका मार्मिक चित्रण किया है कि पढ़ी - लिखी नारी भी प्रेम की असफलता में किसप्रकार फँसती है। नारी की चुनाव की गलती और उसके दुष्परिणामों की ओर उषाजी ने संकेत किया है।

"उन्मुक्ति" में पूर्णिमा केडियाजी ने प्रेम की असफलता का चित्रण करते हुए नारी को इस समस्या से बाहर आने के मार्गों की भी चर्चा की है। इसमें लेखिका ने नारी की इस पुरानी समस्या को एक नयी दृष्टि से चित्रित किया है।

"ट्रेक्टर का पहाड़" [जगवीर सिंह वर्मा] "प्राचीन और तीन चेहरे," [निर्मला अग्रवाल] "अपने होने का एहसास," [मेहरुन्निसा परवेज] "युक्ति" [राजेंद्र दानी] इन चार कहानियों में नारी की आर्थिक दुर्बलता की समस्या और उसके दुष्परिणामों का चित्रण किया है। इन चार कहानियों के लेखकों ने नारी की परंपरागत स्थिति और भारतीय नारी की सहनशक्ति का करुणापूर्ण चित्रण किया है। अर्थात् लेखकों की इन कहानियों में पुरानी दृष्टि का ही परिचय मिलता है। एक भी कहानी में नारी का विद्रोही रूप नहीं दिखायी देता।

"वह लड़की" कहानी में रमाकांतजी ने नौकरीपेशा नारी की समस्या का चित्रण करते हुये नारी का विद्रोही रूप दिखाया है। आज की नारी किसप्रकार अपनी हर समस्या से लड़ रही है - इसका मार्मिक चित्रण किया है। कहानी सीधी, सरल किंतु आधुनिक नारी समस्या की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

"ताशमहल" [चित्रा मुद्गल] "प्रसंग" [उषा प्रियवंदा] "इस्तिंजा का ढेला" [माजदा असद] "तान्सेन" [चंपा लिमये] इन चार कहानियों में विवाह - समस्या का चित्रण किया गया है। "ताशमहल" और "इस्तिंजा का ढेला" में नारी के विवाह के प्रति विचारों में बदलाव का चित्रण किया है। इन दो लेखिकाओं की इन कहानियों में नारी का विद्रोही रूप चित्रित किया है। अत: नारी - विवाह - समस्या की ओर देखने का लेखिकाओं का प्रगतिवादी दृष्टिकोण दिखायी देता है। "प्रसंग" और "तान्सेन्" में उषा प्रियवंदाजी और चंपा लिमयेजी ने नारी - विवाह - समस्या को चित्रित करते हुए परंपरागत नारी की घुटनशीलता का ही चित्रण किया है।

"अब चिट्ठी नहीं आयेगी" कहानी में कर्तार सिंह दुग्गलजी ने नारी - दहेज - समस्या को आधुनिक दृष्टि से चित्रित किया है। और नारी की इस भयंकर समस्या का हल एक आधुनिक रूप में ढूँढना इस कहानी की विशेषता है। अत: लेखक का एक नया दृष्टिकोण इस कहानी की एक नयी और महत्त्वपूर्ण देन है। इसके साथ ही लेखक ने पूरी कहानी को पत्रात्मक शैली से चित्रित किया है। भाषा में प्रभावात्मकता और कहानी में करुण रस दिखायी देता है।

"आवागमन" कहानी में बलरामजी ने नारी - स्वतंत्रता की सीमाओं का चित्रण किया है। इस कहानी में इसका मार्मिक चित्रण किया गया है कि नारी किसप्रकार पुरुष के पीछे घसीट रही है। अत: लेखक ने इसमें नारी - स्वतंत्रता की सीमाओं का परंपरांगत दृष्टि से ही चित्रण किया है।

"सुंदर पड़ोस" में प्रेम जनमेजयजी ने नारी के अकेलेपन की समस्या को उठाया है। बहुत ही छोटे छोटे उदाहरण देकर नारी की इस महत्त्वपूर्ण समस्या का चित्रण इस कहानी की विशेषता है। इस कहानी में हास्य शैली का प्रयोग किया है। कहानी छोटी किंतु अत्यंत सशक्त भाषा में चित्रित है।

"चक्कर घिन्नी" कहानी मेलेखिकाने इस ओर निर्देश किया है कि नारी को समय के अनुसार बदलना आवश्यक है।

उपर्युक्त इन सभी कहानियों में नारी की महत्त्वपूर्ण समस्याओं को चर्चित किया गया है। इससे पहले भी नारी की इन समस्याओं का चित्रण किया गया है किंतु, "सारिका" सन् १९८९ की इन कहानियों में लेखकों की दृष्टि एवं परिवेश की नवीनता के कारण उन सभी कहानियों में विशेषता दिखाई देती है। कहानी की वस्तु और अभिव्यक्ति में परिवर्तन दिखाई देता है। इन सत्रह कहानियों में नारी-समस्या की विषयों का विस्तर, दृष्टिकोण की निर्मिति एवं सुस्थिरता दिखायी देती है। कुछ कहानियों में नारी का विद्रोही रूप दिखायी देता है परिणामत: वे कहानियाँ सिर्फ मनोरंजन न रहकर गम्भीर और सोद्देश्य बन गई हैं। आलोच्य - काल की इन सभी कहानियों में वास्तविकता का दर्शन होता है इनमें नाम मात्र भी काल्पनिकता नहीं है। अत: लेखक कल्पनाजन्य आदर्शवाद की अपेक्षा यथार्थता का चित्रण करना चाहते है।

निष्कर्ष :-

आलोच्य विषय के इन सत्रह कहानियों में से "आइने की वापसी", "उन्मुक्त," "वह लड़की", "ताशमहल", "इस्तीफा का ढेला", "अब चिट्ठी नहीं आयेगी", "चक्करघिन्नी" आदि कहानियों में लेखकोंका का प्रगतिवादी दृष्टिकोण दिखायी देता है। इन कहानियों के माध्यम से नारी की विविध स्मी समस्याओं का चित्रण करते हुए उन्होंने उन समस्याओं से बाहर आनेके कुछ नए मार्गों की चर्चा की है।

"जुगनू" , "शिखर और शिखर", "प्रसंग", "ट्रेक्टर का पहाड़", "प्राचीन और तीन चेहरे", "अपने होने का एहसास", "युक्ति", "तानसेन", "आवागमन", "सुदंर पड़ोस" इन दस कहानियों में नारी की परंपरांगत पीड़ा अथवा उसकी परंपरांगत समस्याओं का ही चित्रण किया गया है।

//////////////////////